Indian J. Soc. & Pol. 08 (02) : 107-108 : 2021 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
31 JULY 2021 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

रियासत जौनपुर से अटल जी के सम्बन्ध

अखिलेश्वर शुक्ला[1], अमृता दूबे[2]
[1]प्राचार्य, राजा श्री कृष्ण दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय जौनपुर, उ0प्र0 भारत
[2]शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, राजा श्री कृष्ण दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय जौनपुर उ0प्र0 भारत

ABSTRACT

भारत की भूमि पर जन्म लेने वाले महान जननायक राष्ट्रवादी राजनेता जी जन–जन की अभिव्यक्ति का आधार बने आत्मनिर्भर अखण्ड भारत के स्वप्न द्रष्टा भारत रत्न पण्डित अटल बिहारी वाजपेयी राजनीति के शिखर पुरूष होने के साथ–साथ संवेदनशील राष्ट्रवादी साहित्यकार एवं पत्रकार तथा कुशल वक्ता थे जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन देश के लिए समर्पित कर दिया था। "उनके संस्मरण यहा के वायुमण्डल में यहा के कण–कण में जनमानस में विद्यमान है जो आज की पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत है।"

KEYWORDS:

"अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसम्बर 1924 को मध्य प्रदेश के ग्वालियर में शिंदे की छावनी में हुआ था। (शर्मा, 2015 पृ011)लेकिन अटल जी का राजनीतिक परिक्षेत्र उत्तर प्रदेश बना जहाँ से उनके पूर्वजो का सम्बन्ध था। उत्तर प्रदेश के कई क्षेत्रो से अटल जी का परिचय था लेकिन ऐतिहासिक रियासत जौनपुर जो महर्षि जमदग्नि की तपोस्थली की विद्यमानता के कारण प्राचीन तो है साथ ही गुप्त व बौद्ध कालीन अवशेषों की प्राप्ति के कारण यह शहर से ऐतिहासिक भी है। इस ऐतिहासिक शहर से अटल जी का सम्बन्ध तब जुडा जब वे पहली बार चुनावी सभा को सम्बोधित करने आये थे। यद्यपि इसके पहले लोग अटल जी को पान्चजन्य पत्रिका के माध्यम से पढ़ा एवं जाना था लेकिन जब पहली बार लोगों ने अटल जी को सुना एक सुनिश्चित समयान्तरालपर लोगो के मनोभाव के अनुकूल अपनी बात कहने की ओजपूर्ण वाक् शैली के आकर्षण में लोग आबद्ध हुए बिना न रह सके। अटल जी के इस वक्तृत्त शैली को परिणाम था कि जिस जनसंघ पार्टी को कोई प्रारम्भ में जानता नहीं था उसने एक ही वर्ष से अपार लोकप्रियता हासिल कर लिया।

"21 सितम्बर 1951 को प्रादेशिक जनसंघ की उत्तर प्रदेश में स्थापना हुई।"(गुप्त,,1999 पृ047) अटल बिहारी वाजपेयी इसके संस्थापक सदस्यों में एक थे।"(शर्मा, 2015, पृ048) 'एकात्मक मानववाद के प्रणेता' पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के साथ।

जनसंघ की स्थापना के दो माह ही व्यतीत हुए थे पार्टी के नाम से भी लोग परिचित नहीं हुए थे कि प्रथम आम चुनाव शुरू होने की घोषण हो गयी। पार्टी व उससे जुड़े लोगो के लिए यह एक चुनौतिपूर्ण समय था। फलतः अटल जी ने कई स्थानों की यात्रा की चुनाव प्रचार के लिए रात दिन एक कर दिया इसी क्रम में अटल जी 1952 में जौनुपर आये थे 'पार्टी प्रत्याशी हीरा राय मुख्तार' के समर्थन में गोपीपुर की इस चुनावी सभा के बाद अटल जी जौनपुर वासियों के चहेते बन गये। उनके भाषण के सन्दर्भ में कहा जाता है कि जब वे बोलना आरम्भ करते थे "अपना एक हाथ उठाकर, विनोदपूर्ण शैली में जब वे चुटीला व्यंग्य करते थे तो तालियों की गड़गड़ाहट से सभास्थल गूँज उठता था।" (शर्मा, 2010,पृ0276)

यह अटल जी के अथक परिश्रम का परिणाम था और माँ शारदा का आर्शीवाद था कि प्रत्येक व्यक्ति अटल जी से प्रभावित था। अटल जी की इस प्रथम रैली ने एक मजबूत आधारभूमि का निर्माण कर दिया था जौनपुर में। भले ही प्रत्याशी को जीत हासिल नहीं हुई लेकिन "राजनीतिक दल की साख अवश्य बनने लगी।"

जौनपुर में जनसंघ पार्टी से जुडी समस्त गतिविधियों का संचालन राजा जौनपुर की हवेली से होता था एवं चुनाव सम्बन्धी कार्य के लिय चुनाव कार्यालय की भी स्थापना यहीं हुई थी क्योंकि जौनपुर रियासत के 11 वें नरेश राजा यादवेन्द्र दत्त दूबे जी जनसंघ के संस्थापक सदस्यों में से एक थे तथा जौनपुर रियासत से चार बार विधायक दो बार सांसद के रूप में निर्वाचित हुए थे तथा आम चुनाव में भी सक्रिय भागीदारी निभायी जिससे आप एक रियासत के नरेश होने के साथ–साथ एक कर्मठ व्यक्तित्व लोकप्रिय नेता एवं ओजस्वी वक्ता क रूप में प्रसिद्ध हुए थे। अटल बिहारी जी स्वयं राजा जौनपुर से अत्यन्त प्रभावित थे तथा जौनपुर के प्रत्येक चुनाव में आते थे जो राजा जौनपुर से जुडा था। इस प्रकार राजा जौनपुर व अटल जी का सम्बन्ध एक दूसरे से जितना घनिष्ठ था उतना ही समर्पण एवं सम्मान का भाव भी विद्यमान था।

राजा साहब एवं संघ के प्रति लोगो का उत्साह एवं निष्ठाभाव देखते हुए पं० दीनदयाल उपाध्याय को जौनपुर से चुनावी क्षेत्र में उतारने का निर्णय किया गया यहा अटल जी पर चुनाव के प्रचार एवं रणनीति तय करने की जिम्मेदारी थी अतः अटल जी ने एक महीने का समय जौनपुर में बिताया जहाँ अटल जी के रहने की व्यवस्था भी राजा जौनपुर के हवेली में हुई थी।

इस एक महीने के समय में अटल जी जौनपुर की एक–एक गली से परिचित हुए। चुनाव प्रचार के लिए पूरी रात जागकर भाषण तैयार किया। अभी तक जौनपुर वासी मात्र अटल जी के सम्प्रेषण कौशल से प्रभावित थे अब तो अटल जी के कर्मठ एवं जुझारू व्यक्तित्व ने लोगो के ह्रदय पर एक अमिट छाय छोड़ी। जौनपुर के लोग अटल जी की रैली में उनका भाषण सुनने के लिए गर्मी और बरसात की भी परवाह नहीं करते थे उन्हें बस

1: Corresponding Author

ऐसा लगता की अटल जी बोलते जाए लोग अटल जी के एक–एक शब्द को बडे ध्यान से सुनते थे और जो उन रैलियों में न पहुच पाते थे अफसोस भी जाहिर करते थे। अब तो अटल जी के बिना चुनाव प्रचार या चुनावी सभा अधूरी सी लगती थी। अटल जी जितने व्यवहार कुशल थे। उतने ही दूरदर्शी भी थे जनता के मनोभावो का अन्दाजा अत्यन्त शीघ्रता से लगा लेते थे। इस 1963 के चुनाव में भी अटल जी ने अनुमान लगा लिया था कि पं० दीनदयाल उपाध्याय का चुनाव परिणाम पक्ष में नहीं आएगा यह सत्य भी हुआ तथापि जनसंघ के प्रति समर्पित भाव से कार्य करने वाले अटल जी अन्य सभी चुनाव में अपना शत प्रतिशत योगदान देने का प्रयत्न करते थे। इसी बीच जब जनसंघ तेजी से आगे बढ़ रहा था। पण्डित दीनदयाल उपाध्याय की सन्दिग्ध परिसिथतियों में जौनपुर रेलवे स्टेशन पर हत्या कर दी गई। इस घटना ने अटल जी को अत्यन्त द्रवित कर दिया था लेकिन वे विचलित नहीं हुए पुनः दीनदयाल जी के सपनो को साकार करने राष्ट्रीय अध्यक्ष के गुरूतर उत्तरदायित्व को लेकर निकल पड़े। इस घटना के एक वर्ष पश्चात् 1969 में जौनपुर में होने वाले मध्यावधि चुनाव में जंगबहादुर यादव की चुनावी सभा को सम्बोधित करने आये थे। 1971 के लोकसभा चुनाव में पण्डित दयाशंकर शुक्ल के समर्थन में चुनावी रैली की तथा 1974 के विधानसभा चुनाव में अपने करीबी मित्र रहे स्वर्गीय उमानाथ सिंह कि लिए चुनावी जनसभा को अपने प्रभावी भाषाण से सम्बोधित कर मंत्रमुग्ध कर दिया था। यह जनसभा मुफ्तीगंज हुई थी।

इस चुनाव के पश्चात् केन्द्र में अटल जी की प्रतिभाशाली नेतृत्व शैली को देखते हुए उन्हें विदेशमंत्री बनाया गया। इन व्यस्तताओं के बाद भी 1980 में जौनपुर में लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी स्वर्गीय राजकेशर की चुनावी सभा में आये थे। इसके बाद में अटल जी आखिरी बार जौनपुर 1999 में आये थे सुजानगंज में हुई चुनावी सभा में रामविलास वेदान्ती के समर्थन में रैली की एवं जनसभा को सम्बोधित किया जनसभा को। इस चुनाव के पश्चात् अटल जी का जौनपुर आगमन पुनः सम्भव न हो सका 1999 में अटल जी भारत के प्रधानमंत्री बने लेकिन जौनपुर वासियों से उनके सम्बन्धों की आत्मीयता सदैव बनी रही। अटल जी जब विदेश मंत्री जैसे उच्च पद को प्राप्त किया था उस समय भी वे जौनपुर शहर को नहीं भूले थे यह अटल जी के व्यवहार का एक अलग ही पक्ष था कि उन्होंने उच्च पद को प्राप्त करने के बाद भी स्वयं में श्रेष्ठता का भाव नहीं आने दिया और सबको साथ लेकर चले जब राजा जौनपुर की हवेली में उनके स्वागत के त्वरण द्वार सजे थे लोग पुष्प वर्षा से स्वागत कर रहे थे और आरती उतारी गयी। उस क्षण अटल जी अत्यन्त भावुक हो गये थे।

आज अटल जी हमारे मध्य नहीं है "16 अगस्त 2018 को एक लम्बी बीमारी के बाद आखिल भारतीय आर्यु विज्ञान संस्थान दिल्ली में श्री वाजपेयी का निधन हो गया। वे जीवन भर भारतीय राजनीति में सक्रिय रहे (धाकरे, 2018,पृ0 16)

राजनीति में जब भी आदर्श उदाहरण की बात होगी उनमें अटल जी का नाम अग्रपंक्ति में होगा। एक ऐसा व्यक्ति जिसने राष्ट्र को आगे बढ़ाने के मार्ग में आने वाली प्रत्येक बाधा का दृढ़ता से सामना किया बात चाहे परमाणु परीक्षण की हो या राष्ट्र संघ को अपनी मातृभाषा में सम्बोधित करना रहा हो। "अटल जी अपने आदर्शों एवं मूल्यों के प्रति सर्वदा अटल" रहे। और अजातशत्रु के रूप में जाने गये विरोधियों के होते हुए भी। इसका एक उत्कृष्ठ उदाहरण हम तब देखते है जब जौनपुर में उनकी अस्थिकलश यात्रा आयी थी, उस समय दलबन्दी की सीमाएं टूट सी गई थी। सड़क पर उमड़ पड़ी वह भीड़ जिसमें सभी सामाजिक आर्थिक वर्ग के लोग साधारण से विशिष्ट कार्यकर्ता तमाम विरोधी दल के नेता श्रद्धासुमन अर्पित करने आये थे। हर कोई अटल जी को अपने–अपने तरीके से श्रद्धान्जलि देना चाहता था एक आखिरी बार स्वयं को अटल जी से जोड़ लेना चाहता था।

अटल जी के जौनपुर में प्रथम आगमन से अन्तिम आगमन तक 47 वर्षों के सम्बन्ध रहे जिनकी गवाह यह ऐतिहासिक रियासत रही जो सदैव अविस्मरणीय रहेगें।

REFERENCES

गुप्ता राधेश्याम, (1999) *निष्काम कर्मयोगी, अटल बिहारी वाजपेयी,* दीनदयाल उपाध्याय सेवा प्रकाशन,

शर्मा महेश (2015) *प्रखर राष्ट्रवादी राजनेता अटल बिहारी वाजपेयी,* डायमण्ड पाकेट बुक्स

शर्मा चन्द्रिका प्रसाद (,2010) *शक्ति से शान्ति अटल बिहारी वाजपेयी,* किताब घर प्रकाशन,

राजस्वी सं० (2008) *मैं अटल बिहारी वाजपयी बोल रहा हूँ* प्रभात प्रकाशन,

धाकरे अलका सिंह, (2018) *भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी,* अनुराग प्रकाशन,

शर्मा चन्द्रिका प्रसाद, (2018) *अटल बिहारी वाजपेयी कुछ लेख, कुछ भाषण,* किताब घर प्रकाशन

हिन्दुस्तान, 16 अगस्त, वाराणसी